

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री भगवान विष्णु नमः ॥

श्री विष्णु आरती

Vishnu Aarti — संपूर्ण पावन आरती पद, सरल हिंदी भावार्थ एवं विधि सहित

रचयिता: स्वामी शिवानंद (परंपरागत) ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण पावन आरती पद (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

टेक

ॐ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा॥
सत्यनारायण स्वामी, जन पातक हरणा॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा...॥

भावार्थ: हे माता महालक्ष्मी के हृदय-वल्लभ, क्षीरसागर-निवासी प्रभु! आपकी सदा ही जय हो। हे समस्त जगत के आधार, सत्यस्वरूप भगवान श्री सत्यनारायण स्वामी! आप अपनी शरण में आए समस्त दीन-दुखियों और भक्तों के पापों, संतापों तथा अज्ञान का समूल नाश करने वाले हैं। हे करुणामय श्रीहरि, आपकी बारंबार जय हो।

पद १

रतन जड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजै।
नारद करत निरंतर, घंटा ध्वनि बाजै॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा...॥

भावार्थ: हे प्रभु! आप बहुमूल्य मणियों और दिव्य रत्नों से जड़े भव्य सुवर्ण सिंहासन पर विराजमान हैं, जहाँ आपका चतुर्भुज दिव्य श्याम रूप अनुपम छटा बिखेर रहा है। देवर्षि नारद जी वीणा की मधुर झंकार के साथ निरंतर आपका गुणगान कर रहे हैं और मंदिर में मंगलगान के साथ मधुर घंटा-ध्वनि गूंज रही है।

पद २

प्रकट भए कलि कारण, द्विज को दरश दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा...॥

भावार्थ: कलियुग में भटके हुए जीवों के उद्धार हेतु आपने अत्यंत दयालु होकर एक वृद्ध ब्राह्मण (संन्यासी) का रूप धरा और दरिद्र विप्र को साक्षात दर्शन दिए। आपने उन्हें सत्यनारायण व्रत का मार्ग दिखाकर उनकी घोर दरिद्रता मिटाई और उनकी झोपड़ी को स्वर्ण-महल (कंचन महल) में परिवर्तित कर दिया।

पद ३

दुर्बल भील कठौता, जिन पर कृपा करी।
चंद्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपत्ति हरी॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा...॥

भावार्थ: हे भक्तवत्सल दीनानाथ! आपने लकड़ी बेचने वाले अत्यंत निर्धन और दुर्बल भील (सत्यव्रत) पर अपनी अहैतुकी कृपा बरसाई और उसे अखंड सुख व मोक्ष दिया। वहीं महाराज चंद्रचूड़ ने जब आपकी शरण ली, तो आपने उनके राज्य के समस्त संकट, शत्रु-भय और विपत्तियों का क्षण भर में हरण कर लिया।

पद ४

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीनी।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर स्तुति कीनी॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा...॥

भावार्थ: साधु नामक वैश्य ने आपके आशीर्वाद से संतान और व्यापार का मनोरथ पाया, परंतु अहंकारवश व्रत की श्रद्धा भुला दी। जब उसने अपने कर्मों का कष्टप्रद फल पाया और कारागार में पड़ा, तब उसने पश्चाताप कर हाथ जोड़कर आपकी स्तुति की और आपने पुनः उसका उद्धार कर धन-धान्य लौटाया।

पद ५

भाव भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धरयो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सरयो॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा...॥

भावार्थ: हे प्रभु! आप किसी बाह्य आडंबर के भूखे नहीं, केवल शुद्ध भाव और सच्ची प्रीति के वश में हैं। अपने भक्तों की परीक्षा लेने और उन पर कृपा करने के लिए आप प्रतिक्षण नूतन लीला-रूप धरते हैं। जिस भी भक्त ने निष्कपट श्रद्धा से आपका स्मरण किया, उसके सारे बिगड़े कार्य आपने सहज ही सिद्ध कर दिए।

पद ६

ग्वाल बाल संग राजा, वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हो, दीनदयालु हरी॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा...॥

भावार्थ: हे अनाथों के नाथ! वन में जब ग्वाल-बालों ने निष्पाप भाव से आपका पूजन किया और राजा तुंगध्वज ने भी बाद में अपनी भूल सुधारकर उन बालकों के साथ आपका प्रसाद ग्रहण किया, तो आपने उन सभी को मनवांछित फल, राज्य-वैभव और अंत में अपना परम धाम प्रदान किया।

पद ७

चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा...॥

भावार्थ: आपके पूजन में गेहुं के आटे की सवाई पंजीरी (पंजीरी प्रसाद), केला (कदली फल), पंचामृत, मेवा और मिष्ठान्न अर्पित किए जाते हैं। सुगंधित धूप, दीप, कर्पूर और विशेषकर पावन तुलसीदल के अर्पण मात्र से सत्य के अधिष्ठाता प्रभु श्री सत्यनारायण तत्काल प्रसन्न होकर वरदान देते हैं।

पद ८

श्री सत्यनारायण जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन पातक हरणा॥
ॐ जय लक्ष्मी रमणा...॥

भावार्थ: स्वामी शिवानंद जी कहते हैं कि जो भी श्रद्धालु नर-नारी पूर्ण श्रद्धा, एकाग्र चित्त और भक्ति-भाव से भगवान श्री सत्यनारायण (विष्णु) की इस पावन आरती का नित्य या पूर्णिमा पर गान करता है, वह इस लोक में समस्त सुख-सौभाग्य भोगकर अंत में प्रभु के परम पद को प्राप्त करता है।

नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **शुभ दिन एवं समय:** विष्णु आरती का गान नित्य प्रातः और संध्या आरती के समय किया जा सकता है। विशेष रूप से **गुरुवार (बृहस्पतिवार)**, **एकादशी तिथि**, **पूर्णिमा**, सत्यनारायण कथा के समापन पर और वैकुंठ एकादशी के दिन यह आरती करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है।
- **दिशा एवं आसन:** आरती करते समय साधक का मुख **पूर्व या उत्तर दिशा** की ओर होना चाहिए। स्वयं स्वच्छ पीले या श्वेत वस्त्र धारण करें और कुश अथवा ऊन के पवित्र आसन पर खड़े हों।
- **दीपक एवं थाल की तैयारी:** पीतल, तांबे या चांदी की थाली में कुंकुम से स्वास्तिक बनाएं। आरती के लिए गाय के शुद्ध घी का पंचमुखी दीपक अथवा शुद्ध कर्पूर का उपयोग करें। थाली में पीले पुष्प, अक्षत और तुलसीदल अवश्य रखें।
- **तुलसीदल का अनिवार्य नियम:** भगवान विष्णु की पूजा और आरती तुलसीदल के बिना अधूरी मानी जाती है। नैवेद्य में सवाया पंजीरी (भुने गेहुं के आटे में घी व चीनी), पंचामृत और केले (कदली फल) पर तुलसी का पत्ता रखकर ही भोग लगाएं।
- **आरती घुमाने की शास्त्रीय विधि:** आरती के दीपक को भगवान की प्रतिमा के सम्मुख इस क्रम में घुमाएं: